1910

(1)

Online

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

HL-A-DTVF-17

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): विकास गुप्ता

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हां ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 1 ; 5 अक्टूबर, 2017

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]: 0 0 1 3 3 3 4

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Vikas

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided into two **SECTIONS**.*

*Candidate has to attemp **FIVE** questions in all.*

*Questions Nos. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, **THREE** are to be attempted choosing at least ONE from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 131   टिप्पणी (Remarks):

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

Scanned by CamScanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस भाग में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

SECTION 'A'

10 × 5 = 50

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए:

(क) पहाड़ी हिंदी

उत्तर) पहाड़ी हिन्दी

पहाड़ी हिन्दी उपभाषा वर्ग हिन्दी के पाँच प्रमुख उपभाषा वर्गों में से एक है। अन्य चार उपभाषा वर्ग राजस्थानी हिन्दी, पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, बिहारी हिन्दी हैं।

पहाड़ी हिन्दी हिमाचल के पहाड़ी क्षेत्रों मुख्यत: कुमाऊँ क्षेत्र एवं गढ़वाल क्षेत्र के आस-पास बोली जाती है। पहाड़ी हिन्दी का विकास खस प्राकृत से खस अपभ्रंश एवं खस अपभ्रंश से पहाड़ी हिन्दी के क्रम में हुआ है। ~~पहाड़ी हिन्दी~~

पहाड़ी हिन्दी में दो बोलियाँ कुमाउँनी एवं गढ़वाली शामिल की जाती हैं।

Copyright – Drishti The Vision Fou

यहाँ इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
Please do not write anything except the question number in this space

पहाड़ी हिन्दी पर आर्यभाषाओं के प्रभाव के साथ - साथ अनार्यभाषाओं जैसे तिब्बती, चीनी, खस जनजातीय प्रभाव भी है। मध्यकाल में ब्रजभाषा का प्रभाव भी हुआ है। पहाड़ी हिन्दी की दो बोलियाँ निम्नलिखित हैं :-

(1) कुमाऊँनी

कुमाऊँ क्षेत्र (पिथौरागढ़ आदि) में बोली जाने वाली बोली है। इसमें सानुनासिकता की प्रवृत्ति है। ब्रजभाषा के प्रभाव से ओकारांतता की प्रवृत्ति है। जैसे - कालो, घोड़ो आदि। बहुवचन निर्माण हेतु 'अन' प्रत्यय का प्रयोग (जैसे - घोड़न) इसकी विशेषता है। कर्ता कारक हेतु 'लै' परसर्ग, कर्म हेतु 'कणि' परसर्ग मुख्य विशेषता है।

(2) गढ़वाली

गढ़वाल क्षेत्र में बोली जाने वाली बोली है। राजस्थानी एवं पंजाबी का पर्याप्त प्रभाव रहा है। बहुवचन निर्माण हेतु 'ऊँ' प्रत्यय का प्रयोग (घोड़ा > घोड़ूँ) इसकी विशेषता है। कर्ता हेतु 'न' परसर्ग, कर्म हेतु 'कुणि' परसर्ग अन्य विशेषताएं हैं।

Good 6

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation
Scanned by CamScanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) रहीम के काव्य में खड़ी बोली हिन्दी का प्रारंभिक स्वरूप

उत्तर) प्रायः खड़ी बोली की साहित्यिक परंपरा की शुरुआत 19 वीं सदी से औपचारिक रूप से दिखाई देती है। परंतु, आदिकाल, भक्तिकाल में भी खड़ी बोली के सीमित साहित्यिक प्रयोग उपलब्ध होते हैं। जैसे- सिद्ध-नाथ साहित्य, खुसरो के काव्य, संत साहित्य, रहीम आदि के काव्य में।

अब्दुल रहीम खानखाना अकबर के दरबारी सलाहकार एवं सेनापति रहे हैं। परंतु, उनकी ख्याति उनके साहित्य के कारण है। एक ओर जहाँ रहीम अवधी में 'बरवै नायिका भेद' एवं ब्रज में 'दोहावली' रचते हैं; वहीं खड़ी बोली में 'मदनाष्टक' उनकी प्रमुख रचना है।

वस्तुतः रहीम के काव्य में खड़ी बोली शब्दों के स्तर पर उपस्थित है, व्याकरणिक स्तर पर नहीं। अर्थात्- रहीम प्रायः अवधी व ब्रज के व्याकरणिक ढाँचे के भीतर शब्दों के स्तर पर खड़ी

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

बोली का प्रयोग करते है। उदाहरण के लिए-

"रहीमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून
पानी गये न उबरे, मोती मानुस चून।

एक अन्य उदाहरण में कुछ शब्दों को छोड़कर अन्य शब्द आधुनिक खड़ी बोली से समानता रखते है। जैसे-

"रहीमन ओछे नरन सों, बैर भली न प्रीत
काटे चाटे श्वान के, दुहूँ भाँति विपरीत।"

"मदनाष्टक" रहीम की प्रमुख रचना है। इसमें केवल शब्दों के स्तर पर ही नहीं बल्कि व्याकरणिक स्तर पर भी खड़ी बोली साफ तौर पर देखी जा सकती है-

"पकरी परम प्यारे साँवरे को मिलाओ
असल अमृत प्याला, क्यों न मुझको पिलाओ।।"

इस प्रकार खड़ी बोली की साहित्यिक परंपरा के विकास में रहीम का योगदान विशिष्ट है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation
Scanned by CamScanner

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) अवधी के अरघान जायसी

उत्तर) अमीर खुसरो की रचना 'खालिकबारी' में 'अवधी' का पहला उल्लेख मिलता है परंतु, अवधी में साहित्यिक परंपरा का विकास निर्गुण प्रेमाश्रयी काव्यधारा या सूफी काव्यधारा से ही आरम्भ होता है। इसकी शुरुआत मुल्ला दाऊद की रचना 'चंदायन' से होती है परंतु, अवधी का सफल साहित्यिक प्रयोग जायसी की रचना 'पद्मावत' में हुआ है।

जायसी की अवधी की प्रमुख विशेषता यह है कि उन्होंने लोक जीवन में प्रचलित अवधी का प्रयोग किया है। जायसी द्वारा तुलसी की भाँति संस्कृत शब्दों का अवधीकरण नहीं हुआ है। इस संदर्भ में आचार्य शुक्ल का मत है कि "जायसी की पहुँच अवध में प्रचलित लोकभाषा के माधुर्य स्रोत तक थी परंतु, गोस्वामी जी की पहुँच दीर्घ संस्कृत कवि परंपरा द्वारा परिपक्व चासनी के भांडागार तक पूरी पूरी थी"।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

अवधी और के लोकप्रचलित शब्द जैसे 'मरवट नीरं', 'रवंजरा' आदि का प्रयोग जायसी द्वारा हुआ है। ध्यातव्य है कि पहली बार हेतु अवधी में इन शब्दों का प्रयोग होता है। यह अलग है कि 'चहुमी', 'अंधकार' जैसे अपभ्रंश के कुछ शब्द जायसी के काव्य में दिखते हैं। परंतु, जायसी की विशेषता खालिस अवधी का प्रयोग है। आचार्य शुक्ल का मत है कि "अवधी की खालिस एवं नमेल मिठास के लिए पद्मावत का नाम बराबर लिया जाएगा।" जायसी की खालिस अवधी का एक उदाहरण इस प्रकार है -

"का हँसौ तुम मोसौं, किएउ और सौं नेह
तोहि मुख चमकै बिजुरी, मोहि मुख बरसै मेंह।"

6/10

उपरोक्त विशेषता के अलावा जायसी की अवधी मुहावरों के प्रयोग से भी युक्त है; (सूधी अंगुरि न निकसै घीउ) बिम्बात्मकता, चित्रात्मकता अन्य विशेषताएँ हैं। कहीं कहीं व्याकरणिक दोष अवश्य दिखाई देते हैं जैसे 'बीजु' पुल्लिंग शब्द के स्थान 'लजाना' स्त्रीलिंग क्रिया का प्रयोग।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

Scanned by CamScanner

(घ) अपभ्रंश के भेद

उत्तर) अपभ्रंश के भेदों के संबंध में विद्वानों में मत-विभिन्नता की स्थिति है। इसके दो कारण हैं- पहला कारण यह है कि कुछ विद्वान अपभ्रंश को 'भाषिक स्थिति' मानते हैं वहीं कुछ 'विशिष्ट भाषा'। दूसरा कारण यह है कि अपभ्रंश के भेदों के संबंध में पर्याप्त प्रमाणों की उपलब्धता नहीं है।

जिन विद्वानों द्वारा अपभ्रंश को 'विशिष्ट भाषा' माना जाता है उनके द्वारा अपभ्रंश को सीमित भेद प्रस्तुत किए गए हैं। नमिसाधु द्वारा अपभ्रंश के तीन भेद किए गए हैं- 'उपनागर अपभ्रंश', आभीर अपभ्रंश, ग्राम्य अपभ्रंश। वहीं, मार्कण्डेय द्वारा किए गए भेद नागर अपभ्रंश, उपनागर अपभ्रंश, व्राचड़ अपभ्रंश है। डॉ. नामवर सिंह द्वारा मार्कण्डेय के नागर एवं नमिसाधु के उपनागर ~~का~~ अपभ्रंश को एक माना गया है जो गुजरात आदि क्षेत्रों में प्रयुक्त होती थी। अन्य भेदों की व्याख्या प्रमाणों के अभाव में वे नहीं कर सके।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

डॉ. नामवर द्वारा अपभ्रंश के तीन भेद पश्चिमी अपभ्रंश, पूर्वी अपभ्रंश, दक्षिणी अपभ्रंश किए गए हैं। पश्चिमी अपभ्रंश में पश्चिमी क्षेत्र में 'णायकुमार चरिउ' आदि में, पूर्वी अपभ्रंश पूर्वी क्षेत्र में सरहपा आदि कवियों के यहाँ, दक्षिणी अपभ्रंश महाराष्ट्र के दक्षिणी क्षेत्र में 'पाहुड़ दोहा' आदि में दिखती है। परंतु, अन्य विद्वानों द्वारा प्रमाणों के अभाव में यह वर्गीकरण अस्वीकृत होता रहा है।

जिन विद्वानों द्वारा अपभ्रंश को भाषिक विकास की स्थिति माना गया है, उन्होंने अपभ्रंश के कई भेद किए हैं। मार्कण्डेय का उल्लेख है कि कई विद्वानों द्वारा अपभ्रंश के 27 भेद तक किए गए हैं।

डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी एवं डॉ. धीरेंद्र वर्मा द्वारा अपभ्रंश को भाषिक विकास की स्थिति माना गया है। इनके अनुसार :-

शौरसेनी प्राकृत > शौरसेनी अपभ्रंश   महाराष्ट्री प्राकृत > महाराष्ट्री अपभ्रंश
मागधी प्राकृत > मागधी "   पैशाची प्राकृत > पैशाची "
अर्धमागधी प्राकृत > अर्धमागधी "

कुल मिलाकर प्रमाणों के अभाव में निश्चित मत प्रस्तुत नहीं हो सका है। संभावना के तौर पर इन भेदों को स्वीकार किया जा सकता है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

Scanned by CamScanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) हिन्दी भाषा-क्षेत्र

उत्तर) हिन्दी भाषा क्षेत्र का तात्पर्य उस भौगोलिक क्षेत्र से है जहाँ हिन्दी को बोलने, समझने, लिखने की भाषा के रूप में प्रयोग किया जाता है।

हिन्दी भाषा का प्रमुख क्षेत्र भारत के उत्तर एवं मध्य भारतीय ~~क्षेत्र~~ 10 राज्यों का क्षेत्र है जहाँ भाषाविज्ञान के शब्दों में हिन्दी 'प्रथम भाषा' के रूप में प्रयुक्त होती है। ये राज्य हैं - उत्तराखण्ड, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखण्ड, छत्तीसगढ़। इनकी आबादी देश की आबादी का 40% है।

हिन्दी भाषा का दूसरा क्षेत्र उन भाषायी राज्यों का क्षेत्र है जिनकी भाषाओं का विकास हिन्दी के समान ही आर्यभाषा संस्कृत से हुआ है। इन राज्यों में पंजाब, गुजरात, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, असम राज्य आते हैं। भाषाविज्ञान के शब्दों

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

में हिन्दी जहाँ 'द्वितीय भाषा' के रूप में प्रयुक्त होती है। इनकी आबादी लगभग 30-32% है। इस प्रकार देश की कुल आबादी का 70-72% हिन्दी भाषी है।

इसके अलावा हिन्दी के क्षेत्र से अन्य देशों में प्रवास करने वाले लोगों के कारण हिन्दी इन प्रवासी देशों में भी प्रयुक्त होती है। इनमें मॉरिशस, सूरीनाम, फिजी, त्रिनिदाद एवं टोबैगो आदि हैं।

इतना ही नहीं, अन्य देशों में वर्तमान में लगभग 120 देशों में हिन्दी का अध्यापन होता है। जैसे - जर्मनी, अमेरिका, इंग्लैण्ड, आदि।

इस प्रकार हिन्दी विश्व की सर्वाधिक जनसंख्या द्वारा प्रयुक्त भाषाओं में से एक है।

6/10

Scanned by CamScanner

दृष्टि The Vision

2. (क) मध्यकाल में काव्यभाषा के रूप में ब्रजभाषा के विकास पर प्रकाश डालिए। 20

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

उत्तर)

ब्रजभाषा शब्द का उल्लेख यूं तो 16 वीं सदी में मिलता है परंतु, उसके पहले भी इसका सीमित साहित्यिक प्रयोग दिखाई देता है। नाथकवियों के यहाँ ब्रजभाषा के प्रारंभिक लक्षण दिखाई देते हैं-

'जोगी सोई जानिये जग तें रहे उदास
तत निरंजन पाइये कहे मछंदरनाथ।'

वहीं, रासो काव्यधारा में 'पिंगल शैली' के रूप में इसका प्रयोग हुआ है। डॉ. धर्मवीर ने तो पिंगल को ब्रज ही माना है। इसके अलावा खुसरो के काव्य में ब्रजभाषा का प्रारंभिक प्रयोग दिखाई देता है-

'मेरा मोसे सिंगार करावत, आगे बैठ के मान बढ़ावत
वासे चिकन ना कोउ दीसा, क्यों सखि साजन, ना सखि शीशा।'

इसके अलावा अन्य लोगों में भी जैसे- संत नामदेव विष्णुदास आदि ब्रजभाषा का प्रयोग करते दिखाई देते हैं। सिख गुरुओं के यहाँ भी ब्रजभाषा का 'पंजाबी मिश्रित रूप' दिखाई देता है:-

"जनम जनम का बिछुड़िया मिलिया
साध क्रिपा ते सूखा हरिआ।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृष्णभक्तिकाव्यधारा ने ब्रजभाषा को साहित्यिक रूप से सफल भाषा बना दिया। जिस प्रकार तुलसी, जायसी को पाकर अवधी धन्य हो गई, उसी प्रकार सूर को पाकर ब्रजभाषा। सूर व अष्टछाप के अन्य कवियों द्वारा ब्रजभाषा को बेहद सफल साहित्यिक भाषा के रूप में विकसित किया गया।

आचार्य शुक्ल का मत है - "चलती हुई ब्रजभाषा में पहली साहित्यिक कृति यही (सूर) की मिलती है जो अपनी पूर्णता के कारण आश्चर्य में डाल देती है।" सूर की ब्रजभाषा केवल प्रासंगिक प्रयोग में ही नहीं, उनके द्वारा ब्रजभाषा में शृंगार व वात्सल्य के कोमल भावों की अभिव्यक्ति इस प्रकार की गई कि आचार्य शुक्ल को कहना पड़ा कि "आगे आने वाले कवियों की शृंगार, वात्सल्य की उक्तियाँ सूर की जूठी जान पड़ती हैं। सूर की ब्रजभाषा का एक उदाहरण है -

"निरखति अंक स्याम सुंदर के बार-बार लावति छाती।
लोचन जल कागद मसि मिल कै ह्वै गई स्याम स्याम की पाती।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Scanned by CamScanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

स्पष्ट है कि सूर के काव्य में ब्रजभाषा का तीव्र विकास हुआ। बिंबात्मकता, अप्रस्तुत विधान आदि का प्रभावी प्रयोग सूर की ब्रजभाषा में दिखाई देता है।

सूर के अलावा अष्टछाप के कवियों में नंददास, परमानंददास का योगदान महत्वपूर्ण है:

"मोहन नद क्यों प्रीति बिसारी
कहत सुनत सकुचत उर अंतर दुख लागत है भारी।"
(परमानंददास)

"जो उनके गुन नाहीं और गुन भये कहाँ ते
बीज बिना तरु जमैं मोहि तुम कहौ कहाँ ते।"
(नंददास)

इसके अलावा तुलसी द्वारा भी सीमित मात्रा में ~~अवधी~~ ब्रजभाषा में काव्य की रचना हुई है जिसमें संस्कृत परंपरा का माधुर्य ~~भी~~ भी समाहित हुआ है। जैसे -

"राम को रूप निहारति जानकी, कंगन के नग की परछाहीं
याते सबै सुधि भूल गई, कर टेकि रही, पल टारति नाहीं।"

रीतिकाल में ब्रजभाषा स्वभाव अखिल भाषा एवं अखिल भारतीय काव्यभाषा बन गई। इसी संदर्भ में भिखारीदास का मत है-

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

इस स्थान में प्रश्न के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

"ब्रजभाषा हेत ब्रजवास ही न अनुमानो
ऐसे ऐसे कविन की बानी हूँ सो जानिए।"

रीतिकालीन कवियों द्वारा ब्रजभाषा का चरम कलात्मक विकास हुआ। रीतिकवियों द्वारा काव्यशास्त्रीय सिद्धांतों का प्रभावी प्रयोग ब्रजभाषा में हुआ है। रीतिकाल में ब्रजभाषा की दो शैलियाँ दिखाई देती हैं- रीतिकवियों एवं रीतिमुक्तकवियों की शैली। जैसे:-

"कहत नटत रीझत खिजत मिलत खिलत लजियात
भरे भौन में करत हैं, नैनन ही सों बात।" (बिहारी)

"पद कैसो ह्वानो न सूझि परै
जो बियोग न क्यों हू बिछोहतू है।" (घनानंद)

19 वीं सदी में अंत तक पद्यभाषा के तौर पर ब्रजभाषा का ही प्रयोग दिखाई देता है। इसके बाद खड़ी बोली के द्वारा पद्यभाषा के स्तर पर ब्रजभाषा को प्रतिस्थापित किया गया।

12/20

Scanned by CamScanner

(ख) बुंदेली बोली के भौगोलिक क्षेत्र पर प्रकाश डालते हुए उसकी भाषिक विशेषताओं का उद्घाटन कीजिए। 15

हिन्दी भाषा को पाँच प्रमुख उपभाषाओं में बाँटा जाता है –

हिन्दी भाषा

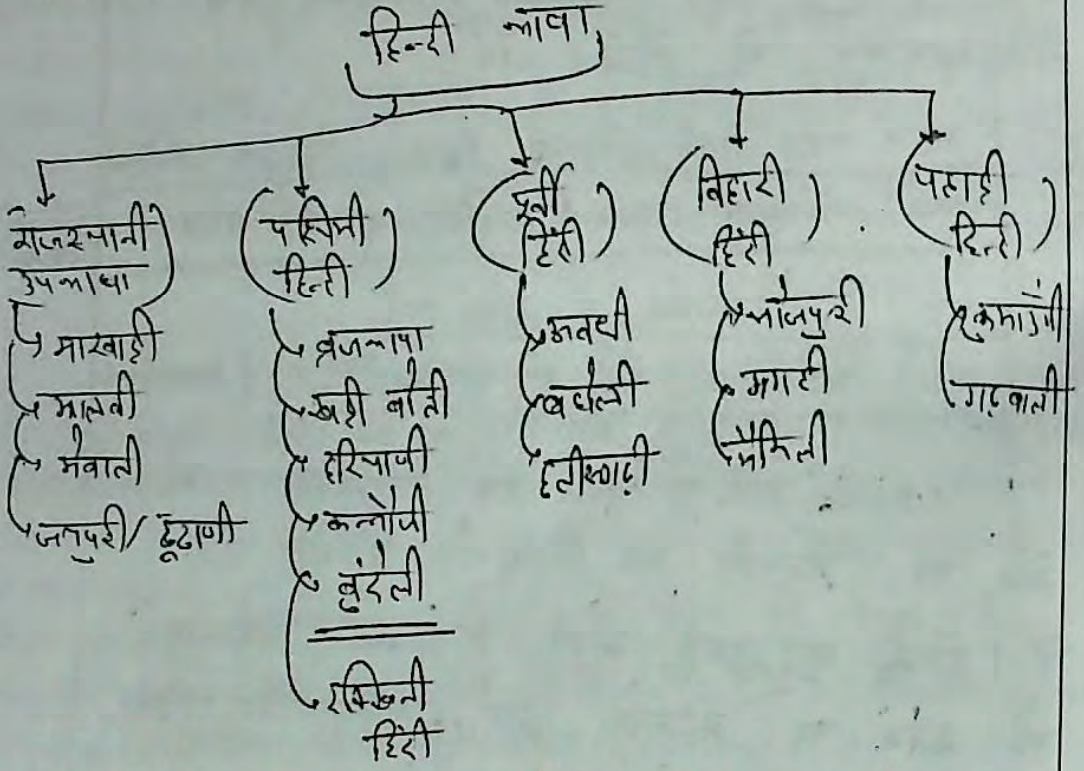

- राजस्थानी उपभाषा
  - मारवाड़ी
  - मालवी
  - मेवाती
  - जयपुरी/ ढूंढाणी
- पश्चिमी हिन्दी
  - ब्रजभाषा
  - खड़ी बोली
  - हरियाणवी
  - कन्नौजी
  - बुंदेली
  - दक्खिनी हिंदी
- पूर्वी हिंदी
  - अवधी
  - बघेली
  - छत्तीसगढ़ी
- बिहारी हिंदी
  - भोजपुरी
  - मगही
  - मैथिली
- पहाड़ी हिन्दी
  - कुमाऊँनी
  - गढ़वाली

जैसा कि उपरोक्त आरेख से स्पष्ट है कि बुंदेली पश्चिमी हिन्दी उपभाषा वर्ग की प्रमुख बोली है। बुंदेली भौगोलिक क्षेत्र के विस्तार की दृष्टि से बुंदेलखण्ड क्षेत्र में अन्तर्गत - झाँसी, टीकमगढ़, ग्वालियर आदि क्षेत्र में बोली जाती है। बुंदेली

दृष्टि The Vision

प्रश्न का उत्तर ... (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

के प्रचलन का भौगोलिक क्षेत्र पश्चिमी हिन्दी उपभाषा वर्ग की अन्य सभी बोलियों की तुलना में अधिक विस्तृत है।

गौरतलब है कि बुंदेली बोली पश्चिमी हिन्दी उपभाषा वर्ग की बोली है। अतः स्वाभाविक है कि यह बोली इस उपभाषा वर्ग की अन्य बोलियों से समानता दर्शाती है। यही कारण है कि कई भाषावैज्ञानिकों द्वारा बुंदेली को ब्रजभाषा के समान ही माना गया है। हालांकि, डॉ. जॉर्ज ग्रियर्सन बुंदेली को अलग बोली मानते हैं।

बुंदेली की भाषिक विशेषताएँ कहीं-कहीं पश्चिमी हिंदी उपभाषा वर्ग की प्रमुख बोलियों खड़ी बोली एवं ब्रजभाषा से कहीं-कहीं समानता दर्शाती हैं। प्रमुख भाषिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं -

(क) 'ऐ' एवं 'औ' का उच्चारण बुंदेली में संयुक्त एवं सामान्य दोनों रूपों में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

Scanned by CamScanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

मिलता है।

(ख) 'स' के स्थान पर 'छ', ष के स्थान पर 'छ' का प्रयोग दिखाई देता है। जैसे- सीता > छीता।

(ग) सर्वनामों के स्तर पर मैं, हौं, मोहि, 'तुम्हारो' आदि दिखाई देते हैं।

(घ) ओकारांतता की प्रवृत्ति भी दिखाई देती है।

इस प्रकार बुंदेली के द्वारा हिन्दी भाषा के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान किया गया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

इस स्थान में प्रश्न ... अतिरिक्त कुछ ... do not write except the number in ...

(ग) भाषा के धरातल पर हिन्दी को अपभ्रंश का अवदान बताइए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उत्तर)

मध्यकालीन आर्यभाषाओं में पालि एवं प्राकृत के पश्चात 'अपभ्रंश' का स्थान आता है। हिन्दी के विकास में अपभ्रंश का महत्वपूर्ण योगदान है। साहित्य एवं भाषा दोनों ही धरातलों पर अपभ्रंश द्वारा हिन्दी को महत्वपूर्ण योगदान दिया गया है।

भाषायी धरातल पर अपभ्रंश का योगदान निम्नलिखित बिन्दुओं द्वारा समझा जा सकता है-

(क) हिन्दी की प्रायः सभी ध्वनियाँ अपभ्रंश में दिखाई देती हैं। 'ड़', 'ढ़' हिन्दी को अपभ्रंश द्वारा ही प्राप्त हुई हैं।

(ख) दीर्घ ऌ, दीर्घ ऋ (ॠ) जैसी ध्वनियाँ अपभ्रंश के समय ही लुप्त हो गयीं थीं ये हिन्दी में भी नहीं हैं।

(ग) 'ऋ' का 'रि' या 'अ', 'इ', 'उ', 'ए' के रूप-परिवर्तन द्वारा हिन्दी के कई शब्दों का निर्माण अपभ्रंश का ही प्रदेय है। जैसे-

कृषाण > किसान
गृह > गेह

~~(घ) ध्वनिक~~

Scanned by CamScanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) क्षतिपूरक दीर्घीकरण द्वारा हिन्दी के कई शब्दों का निर्माण अपभ्रंश द्वारा ही हुआ
कर्म > कम्म > काम, अद्य > अज्ज > आज

(ङ) संज्ञा के स्तर पर 'निर्विभक्तिक प्रयोग' एवं प्रातिपदिकों का स्वरांत होना अपभ्रंश के ही योगदान हैं। हिन्दी भी एक वियोगात्मक भाषा है। जैसे - घोड़ा, काम आदि।

(च) वचन के स्तर पर अपभ्रंश में द्विवचन का लोप हो गया। हिन्दी में भी मात्र दो ही वचन दिखाई देते हैं।

(छ) लिंग के स्तर पर नपुंसकलिंग का प्रयोग अपभ्रंश के दौर में ही समाप्त होने लगा। हिन्दी में भी दो ही लिंग उपस्थित हैं।

(ज) क्रिया संरचना के स्तर पर संस्कृत का तिङन्त परंपरा की जगह कृदन्त परंपरा का प्रारंभ अपभ्रंश में हुआ। हिन्दी में भी यही प्रवृत्ति दिखाई देती है।

(झ) परसर्ग के स्तर पर संबंध कारक हेतु 'का' परसर्ग हिन्दी को अपभ्रंश का ही योगदान है। अन्य परसर्गों का भी विकास

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दिखाई देता है।

~~सार~~

ध्वनिगत एवं व्याकरणिक संरचना के स्तर पर अपभ्रंश द्वारा हिन्दी को महत्वपूर्ण योगदान के साथ-साथ शब्दकोश के स्तर पर भी योगदान है। हिन्दी में अधिकांश तद्भव शब्दों की उत्पत्ति अपभ्रंश के तद्भवीकरण का ही परिणाम है। इसके अलावा देशज शब्दों के साहित्यिक प्रयोग द्वारा हिन्दी के देशज शब्दों के भंडार को भी अपभ्रंश साहित्य द्वारा समृद्ध किया गया है।

Scanned by CamScanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) प्रारंभिक हिन्दी के व्याकरणिक स्वरूप पर प्रकाश डालिए।

उत्तर) प्रारंभिक हिन्दी, पुरानी हिन्दी, आरंभिक हिन्दी नाम भाषाविदों के बीच में विवादों के नाम स्वीकृत हो गए हैं। 'चन्द्रधर शर्मा गुलेरी' जी द्वारा जिस भाषा को पुरानी हिन्दी एवं ~~सुनीति कुमार चटर्जी~~ आचार्य द्विवेदी द्वारा परिनिष्ठित / उत्तरकालीन अपभ्रंश कहा गया है; उसका समय तेरहवीं-चौदहवीं सदी का है अर्थात् - अपभ्रंश एवं अवहट्ट के बाद का है।

पुरानी हिन्दी की रचनाओं के संदर्भ में भी विवाद की स्थिति है। परंतु, भाषाविदों में इस बात की सहमति है कि रोडा द्वारा रचित 'राउलवेल' पुरानी हिन्दी की प्रारंभिक रचना है।

पुरानी हिन्दी की व्याकरणिक विशेषताएं अपभ्रंश, अवहट्ट के विकासक्रम में ही रही

Copyright – Drishti The Vision Foundation
Scanned by CamScanner

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

रूप में समझी जा सकती हैं। प्रमुख व्याकरणिक विशेषतायें निम्नलिखित हैं:-

(क) संज्ञा के स्तर पर निर्विभक्तिक प्रयोग, प्रातिपदिकों का स्वरांत एवं अकारांत होना आदि विशेषतायें दिखाई देती हैं।

(ख) ~~लिंग~~ वचन के स्तर पर एकवचन एवं बहुवचन की उपस्थिति है; द्विवचन के लोप की प्रक्रिया अपभ्रंश के समय ही प्रारंभ हो गई थी।

~~(ग) वचन के स्तर पर एकवचन एवं बहुवचन की उपस्थिति है। द्विवचन के लोप की प्रक्रिया~~

(ग) लिंग के स्तर पर नपुंसकलिंग का लोप हो गया। केवल दो ही लिंग पुल्लिंग, स्त्रीलिंग दिखाई देते हैं।

(घ) क्रिया संरचना के स्तर पर कृदंतीय क्रियाओं का विकास दिखाई देता है।

(ङ) विशेषण के स्तर पर आकारांत

दृष्टि The Vision

विशेषण में निकटता की प्रवृत्ति है जैसे-

काला > काली।

(च). सर्वनाम के स्तर पर आधुनिक हिन्दी के अधिकांश सर्वनाम दिखाई देते हैं।

जैसे - मेरा, तुम्हें आदि।

(छ) परसर्ग के स्तर पर 'ने', 'को', 'में', 'पर' आदि प्रमुख परसर्ग हैं।

इस प्रकार व्याकरणिक संरचना के स्तर पर प्रारंभिक हिन्दी में वे परिवर्तन देखे जा सकते हैं जिनके द्वारा हिन्दी के विकास की प्रक्रिया को गति मिली।

9/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

Scanned by CamScanner

दृष्टि The Vision

(ग) संत-साहित्य में खड़ी बोली के प्रयोग पर विचार कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

उत्तर) प्राय: ऐसा माना जाता है कि खड़ी बोली की औपचारिक साहित्यिक परंपरा का विकास 19 वीं शताब्दी में हुआ। परंतु खड़ी बोली का विकास पुरानी हिन्दी के समय से ही लगातार चलता आ रहा था। इसके सीमित साहित्यिक प्रयोग सिद्ध-नाथ साहित्य, अमीर खुसरो के काव्य में, कबीर आदि संतों के काव्य में, रहीम के काव्य में दिखाई देते हैं।

संत साहित्य भक्तिकाल की निर्गुण ज्ञानाश्रयी धारा को कहते हैं। इसमें प्रमुख कवि कबीर, रैदास, मलूकदास, रज्जब आदि हैं। इन कवियों की भाषा 'सधुक्कड़ी' या 'पंचमेल खिचड़ी' है जिसमें विभिन्न भाषिक प्रयोगों के साथ 'खड़ी बोली' का प्रयोग भी दिखाई देता है। ~~उदाहरण~~

कबीर के काव्य में खड़ी बोली का प्रयोग अधिक दिखाई देता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

उदाहरण के लिए -

"जो बिछड़े हैं प्यारे से भटकते दर बदर फिरते
हमारा यार है हममें, हमन को इंतज़ारी क्या।"

परवर्ती संत साहित्य में ~~मलूकदास~~ मलूकदास, सुंदरदास आदि कवियों के काव्य में खड़ी बोली का प्रयोग अधिक दिखाई देता है। जैसे- मलूकदास के निम्नलिखित काव्य में:-

"अजगर करै न चाकरी, पंछी करै न काम।
दास मलूका कह गए, सबके दाता राम।।"

संत साहित्य भक्तिकाल के साथ ही समाप्त नहीं हुआ। रीतिकाल में भी दरिया साहब, प्यारी साहब, पलटू साहब आदि कवियों द्वारा संत काव्यधारा जारी रही। इन कवियों के काव्य में भी खड़ी बोली का प्रयोग दिखाई देता है।

जैसे :-

Copyright – Drishti The Vision Foundation
Scanned by CamScanner

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"जात हमारी ब्रह्म है मात-पिता है राम
गिरह हमारा सुन्न में, अनहद में बिसराम।"

इस प्रकार संतकाव्यधारा द्वारा खड़ी बोली की काव्यगत क्षमताओं का प्रारंभिक उदाहरण प्रस्तुत किया गया। सीमित रूप में ही सही, परंतु इन कवियों के यहाँ खड़ी बोली का सरल, सहज रूप दिखाई देता है।

9/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

SECTION 'B'

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

10 × 5 = 50

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए:

(क) विद्यापति की सौंदर्य चेतना का वैशिष्ट्य

उत्तर)

विद्यापति आदिकाल के प्रमुख कवि हैं। इनकी तेरह रचनाओं में।। संस्कृत साहित्य में स्वीकार की जाती हैं जैसे - भूपरिक्रमा, शैवसर्वस्वसार आदि। वहीं, कीर्तिलता, कीर्तिपताका, पदावली हिन्दी साहित्य में शामिल की जाती हैं।

विद्यापति की सौंदर्य चेतना विशिष्ट है। यह जयदेव के गीत गोविंद, हाल की 'गाथासप्तशती' की सौन्दर्य चेतना को आगे बढ़ाती है वहीं, सूर एवं बिहारी जैसे परवर्ती शृंगारिक कवियों के लिए आधार का निर्माण भी करती है।

विद्यापति की सौंदर्य चेतना कीर्तिलता एवं कीर्तिपताका में दिखाई देती है। कीर्तिलता राजाकीर्तिसिंह की प्रशस्ति पर आधारित है। अतः स्वयं ~~विद्यापति~~ द्वारा राजा कीर्तिसिंह के शारीरिक सौंदर्य, शक्तिशाली सेना का विस्तार से वर्णन किया है। इसके अलावा दरबारी सौंदर्य एवं जौनपुर नगर के सौंदर्य ~~का~~ के वर्णन में विद्यापति की दृष्टि मूलतः ~~सांस्कृ~~

Copyright – Drishti The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

नागवारी, ~~व्यक्तिक~~ वकीलानवादी प्रतीत होती है।
इसके अलावा 'पदावली' में विद्यापति की सौन्दर्य चेतना राधा - कृष्ण के संयोग शृंगार के वर्णन में दिखाई देती है। कृष्ण इतने सुंदर हैं कि :-

'ए सखि देखल एक अपरूप
सुनइत मानवि सपन सरूप।"

कृष्ण का सौन्दर्य वाणी का सौंदर्य भी है- 'माधव बोलत मधुरी बानी'। इसके अलावा कृष्ण के सौंदर्य वर्णन का अन्य उदाहरण है-

"सखि हे हमनि अनुभव मोय
और पिरीत अनुराग बखानते तिल तिल नूतन होय
जनम अवधि भर रूप निहारल, नयन न तिरपित भेल।"

इस प्रकार विद्यापति की सौंदर्य दृष्टि बिहारी व सूर जैसे कवियों की सौंदर्य दृष्टि से समानता दर्शाती है एवं घनानंद जैसे रीतिमुक्त कवियों एवं छायावादी कवियों की सौंदर्य दृष्टि से भिन्न है।

6/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Scanned by CamScanner

(ख) अज्ञेय की कहानियों की शिल्पगत विशेषताएँ

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

उत्तर) अज्ञेय हिन्दी कहानी की विकास यात्रा में प्रमुख स्थान रखते हैं। अज्ञेय का संबंध हिन्दी कहानी के इतिहास में 'मनोविश्लेषण-वादी' कहानियों से है।

अज्ञेय की कहानियों दो विचारधाराओं से प्रभावित है - सार्त्र का अस्तित्ववाद एवं फ्रायड का मनोविश्लेषणवाद। दोनों के प्रभाव के चलते अज्ञेय व्यक्ति के मानसिक सन्दर्भ को अपनी कहानियों की विषयवस्तु बनाते हैं।

फ्रायड के मनोविश्लेषणवाद के प्रभाव के कारण अज्ञेय अपनी कहानियों में व्यक्ति के मन की तहों में सोककर सामाजिक प्रचलित नैतिक प्रतिमानों का मूल्यांकन करते हैं।

~~अज्ञेय की प्रमुख कहानी संग्रहों में 'परंपरा', 'जयदोल', 'शरणार्थी', 'अमर वल्लरी', 'कोठरी की बात' प्रमुख हैं।~~

अज्ञेय की कहानियों में आधुनिक शहरीकरण के कारण उत्पन्न यांत्रिकीकरण, अकेलापन,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अखबार आदि को भी प्रस्तुत किया गया है। 'राज/गोपीन' उनकी प्रमुख कहानी है जो यह दर्शाती है कि बचपन के अभाव में किस प्रकार संबंध टूटते हैं। इसका केंद्रीय वाक्य है 'ऐसा तो रोज़ होता है'।

अन्य विषयों पर आधारित कहानियों में 'मेजर चौधरी की वापसी' मानसिक द्वंद्व को, 'पुलिस की सीटी' क्रांतिकारी राष्ट्रवादियों के चित्रण बताती है।

शिल्प के स्तर पर अश्क की भाषा मानसिक गहराई पर स्थित सत्यों को उजागर करने में पूरी तरह सफल है। इसमें लक्षणा का प्रयोग है क्योंकि मानसिक गहराइयों को अभिधा में व्यक्त करना संभव भी नहीं होता। पात्रों के स्तर पर अश्क की कहानियों के पात्र यथार्थ के एकदम निकट हैं। इसके अलावा, अश्क की कहानियाँ बिंबात्मकता, प्रतीकात्मकता आदि को भी धारण करती हैं। कथानक प्रेमचंद की भांति आदि-मध्य-अंत के ढाँचे पर नहीं, नई कहानियों के कथानक की भाँति अन्तर्मुखी है।

6/10

Scanned by CamScanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) अकहानी की विशेषताएँ

उत्तर) 1960 के बाद हिन्दी कहानी को 'समकालीन कहानी' या 'साठोत्तर कहानी' के नाम से जाना जाता है। इस दौर में अकहानी, सक्रिय कहानी, सहज कहानी, समांतर कहानी, जनवादी कहानी आदि कई आंदोलन दिखाई पड़ते हैं।

अकहानी आंदोलन पश्चिम के एंटी स्टोरी मूवमेंट (Anti Story Movement) से प्रभावित है। इसमें जीवन के प्रति निरर्थकता बोध, मूल्यों के प्रति अनास्था, नकार की भावना दिखाई देती है।

दो विश्व युद्धों के कारण पश्चिम में सार्त्र एवं अल्बेयर कामू के 'अस्तित्ववाद' का प्रचार हुआ। इससे 'लघुमानव' की अवधारणा मजबूत हुई। जीवन के प्रति संशयग्रस्तता, विचारधाराओं में अविश्वास, नैतिक मूल्यों के प्रति अनास्था आदि के प्रभाव से 'Anti story Movement' का जन्म हुआ। हिन्दी की 'अकहानी' इसी आंदोलन से प्रभाव ग्रहण करती है।

Copyright – Drishti The Vision
Scanned by CamScanner

दृष्टि The Vision

'अकहानी आंदोलन' के नामकरण पर विवाद है। इसमें 'अ' संज्ञा का अंग है या 'विशेषण' है स्पष्ट नहीं होता। अकहानी के विरोधी आलोचकों का मानना है कि अकहानी कहानी के विरुद्ध है अर्थात् कहानी हेतु आवश्यक मूल बातों का विरोध है; वहीं, अकहानी के समर्थकों का मानना है कि कहानी के संबंध में जोड़े गए नियमों का खंडन करना अकहानी है। क्योंकि अकहानी किसी प्रकार के नियमों को नहीं मानती।

वस्तुत: अकहानी आंदोलन की प्रमुख कहानियों में 'श्रीकांत वर्मा' की 'झाड़ी' एवं 'रवि मधुकर' की 'कटघरे' है। इन कहानियों में आधुनिक भाव-बोध एवं विसंगति बोध के कारण जीवन के प्रति अनास्था, नकार का भाव दिखाई देता है। अकहानीकार किसी भी विचारधारा, मूल्यों, नियमों को मानने को तैयार नहीं है। शिल्प के स्तर पर भी निरंतर कठिनता की स्थिति कथानक के बिखराव में देखी जा सकती है।

6/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(इ) नाटककार रामकुमार वर्मा

उत्तर) डॉ. रामकुमार वर्मा हिन्दी नाटक के इतिहास में एक प्रमुख नाटककार हैं। डॉ. रामकुमार वर्मा हिन्दी नाटक के विकास के में एक ऐसी स्थिति में है ~~[illegible]~~ जहाँ हिन्दी नाटक समकालीन समस्याओं, ~~मनोवैज्ञानिक~~ समस्याओं के रूप में प्रयुक्त को अपनी विषयवस्तु कर रहा है था। इस परिस्थिति में डॉ. रामकुमार वर्मा जयशंकर प्रसाद द्वारा स्थापित नाट्य-परंपरा का ही अनुसरण करते दिखाई देते हैं जहाँ ऐतिहासिक कथानकों के माध्यम से समकालीन समाज के राष्ट्रीय, सांस्कृतिक जागरण का प्रयास किया जाता है।

जिस प्रकार जयशंकर प्रसाद 'स्कन्दगुप्त', 'चंद्रगुप्त', 'ध्रुवस्वामिनी' आदि नाटकों के माध्यम से ऐतिहासिक कथानक के द्वारा समकालीन समस्याओं को उभारते हैं एवं तत्कालीन समाज के सांस्कृतिक जागरण क

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevision

Scanned by CamScanner

प्रभाव करते हैं, इसी प्रकार डॉ. रामकुमार वर्मा अपने नाटकों जैसे 'महाराणा प्रताप' 'शिवाजी' आदि के द्वारा तत्कालीन समस्याओं हेतु सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय जागरण का प्रयास करते हैं।

आपने कई नाटकों में डॉ. रामकुमार वर्मा द्वारा प्रत्यक्षतः समकालीन समस्याओं को भी चित्रित किया गया है। डॉ. वर्मा जातिविहीन, शोषणविहीन, समाज की स्थापना करना चाहते हैं। डॉ. वर्मा का दृष्टिकोण 'आदर्शोन्मुख यथार्थवाद' है। अतः वे नाटक की समस्याओं का आदर्शात्मक समाधान देने का प्रयास करते हैं परंतु, इनके कई नाटक पश्चिम की दुखांत परंपरा के भी निकट हैं।

शिल्प के स्तर पर देखें तो डॉ. वर्मा के नाटकों की भाषा पात्रानुकूल, प्रसाद गुण से युक्त है। डॉ. वर्मा के नाटक रंगमंच हेतु उपयुक्त हैं, इनमें पर्याप्त रंग संकेत भी उपस्थित हैं।

Copyright – Drishti The Vision

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

7. (क) 'सूफी दर्शन' पर प्रकाश डालिए। 20

उत्तर) सूफ़ी दर्शन का मूल संबंध इस्लाम से है। परंतु, सूफ़ी साधकों द्वारा अपनी आवश्यकता-नुसार इस्लाम की मान्यताओं में संशोधन भी किया गया है।

गौरतलब है कि इस्लाम में खुदा, जगत एवं बन्दे की पृथक सत्ता स्वीकार की गई है। उनमें किसी प्रकार का एकत्व स्वीकार्य नहीं है। परंतु, सूफी साधकों द्वारा इस धारणा में संशोधन करते हुए भारतीय अद्वैतवेदांत के 'अहम् ब्रह्मास्मि' एवं प्लोटिनस के 'तत्व-अवतार' विचार को स्वीकार करते हुए 'अन-अल हक' की धारणा स्वीकार की गई जिसका तात्पर्य है- "मैं ही खुदा हूँ"।

सूफ़ी दर्शन के सिद्धांतों को निम्न-लिखित बिन्दुओं द्वारा समझा जा सकता है:-

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright - Drishti The Vision Foundation

(क) सूफ़ी दर्शन के अनुसार ग़ारिफ़त अर्थात् सिद्धावस्था की प्राप्ति जीवन का लक्ष्य है। अर्थात् -खुदा से एकत्व की स्थिति।

(ख) सूफ़ी साधक वहिदुअी रहस्यवाद को स्वीकार करते हैं अर्थात् - एक जगत को सत्य मानते हैं।

(ग) सूफ़ी दर्शन में ईश्वर को प्रेमिका एवं बंदे को प्रेमी के रूप में स्वीकार किया जाता है जहाँ चरम भावुकता की स्थिति में एकत्व की अनुभूति होती है।

(घ) सूफ़ी दर्शन में गुरु को अत्यंत महत्व दिया गया है। गुरु का मानव होना आवश्यक नहीं; यह कार्य कोई पशु पक्षी भी कर सकता है।

(ङ) सूफ़ी दर्शन में भी शैतान की धारणा स्वीकार की गई है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

Scanned by CamScanner

(च) सूफ़ी दर्शन में साधना की चार अवस्थाओं को स्वीकार किया गया है- शरीअत, तरीकत, मारिफ़त, हकीकत। शरीअत की स्थिति कुरान के नियमों का पालन है। तरीकत हृदय के निर्मल होने की स्थिति है। मारिफ़त एकत्व की अनुभूति की स्थिति है, वहीं हकीक़त चरम सुख की स्थिति है।

(छ) सूफ़ी दर्शन के अनुसार कल्ब अर्थात - हृदय में ईश्वर का प्रतिबिंब होता है। अतः हृदय जितना निर्मल होगा, प्रतिबिंब उतना ही स्पष्ट होगा।

गौरतलब है कि वर्तमान समय में सूफ़ी दर्शन को इस्लामिक कट्टरता के विकल्प के रूप में देखा जा रहा है। चूंकि सूफ़ी दर्शन में सांस्कृतिक समन्वय का भाव, निर्मल दृष्टि, प्रकृति के प्रति प्रेमभाव आदि लाते

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

दिखाई देती हैं। अतः निरन्तर ही सूफी रहस्यवादी दर्शन का प्रचार-प्रसार व बढ़ते कट्टरपंथी क्रियाओं का शांतिपूर्ण विकल्प बन सकता है।

11/20

Scanned by CamScanner

(ख) हिंदी कहानी के विकास में कृष्णा सोबती के महत्व को रेखांकित कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

उत्तर) हिन्दी कहानी की विकास यात्रा में कहानीकार कृष्णा सोबती का विशिष्ट महत्व है। कृष्णा सोबती हिन्दी साहित्य में महिला लेखन की प्रमुख हस्ताक्षर हैं।

कृष्णा सोबती नारीवादी चिंतक एवं लेखिका है। अतः उनकी ~~[illegible]~~ कहानियों में नारीवादी चिंतन दिखाई देता है। वे एक विचार को स्वीकार करती हैं कि स्वयं वेदना एवं संवेदना में अंतर होता है। अतः नारियों की स्थिति एवं समस्या को नारियाँ ही समझ सकती हैं।

कृष्णा सोबती की कहानियाँ नवलेखन के दौर में रचित हैं। अतः उनकी कहानियों में नारी-पुरुष संबंधों में बदलाव, नारियों की समस्याएँ, सामाजिक मूल्यों की पुरुष केन्द्रिता ~~[illegible]~~ जैसे विषय उपस्थित हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृष्णा सोबती की प्रमुख कहानी है - 'मित्रो मरजानी'। यह हिन्दी साहित्य की अब तक की सबसे 'बोल्ड' कहानियों में शुमार की जाती है। इसी एक कहानी द्वारा कृष्णा सोबती ने स्त्री यौनिकता को केन्द्र में लाकर खड़ा कर दिया जबकि अब तक पुरुष यौनिकता केन्द्र में थी। इस कहानी की नायिका पुरुषवादी सामाजिक मूल्यों को स्वीकार नहीं करती। साथ ही, नारियों पर थोपी गई नैतिक वर्जनाओं को तोड़कर अपनी यौन इच्छाओं को सहजतापूर्वक स्वीकार करती है।

~~इसके अलावा~~

'बादलों के घेरे' कृष्णा सोबती का प्रमुख कहानी-संग्रह है जिसमें नारीवादी चिंतन आधारित कहानियों को शामिल किया गया है।

इसके अलावा कृष्णा सोबती द्वारा अपनी कई कहानियों में अन्य

Copyright – Drishti The Vision Foundation

Scanned by CamScanner

विषयों को भी उठाया गया है जैसे- 'सिक्का बदल गया' कहानी विभाजन के दर्द पर आधारित है।

कृष्णा सोबती की कहानियों की भाषा में पंजाबी की छौंक मौजूद है। उनकी पंजाबी मिश्रित भाषा कहानी के वातावरण के साथ साथ पाठक को अंचल में डूबने में भी मदद करती है। यही कारण है कि कृष्णा सोबती की कहानियों में आंचलिकता का तत्व बेहद प्रभावी बन पड़ा है। पात्रों के स्तर पर उनके पात्र यथार्थ के प्रतिनिधि हैं।

इस प्रकार कृष्णा सोबती द्वारा हिन्दी कहानी में वही भूमिका अदा की गई जो 'द सैकंड सेक्स' की लेखिका 'सिमोन द बोउवार' द्वारा।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक के महत्त्व के कारण बताइए।

उत्तर) 'ध्रुवस्वामिनी' जयशंकर प्रसाद का प्रमुख नाटक है। 'स्कन्दगुप्त', 'चंद्रगुप्त' आदि अन्य ऐतिहासिक नाटकों की भाँति जयशंकर प्रसाद द्वारा 'ध्रुवस्वामिनी' की रचना भी "ऐतिहासिक" कथानक के आधार पर की गई है।

जयशंकर प्रसाद जिस ~~समय~~ समय हिन्दी नाटक के क्षेत्र में उतरे उस समय हिन्दी नाटक अपनी शैशवावस्था में था। प्रसाद ने भी भारतेंदु की भाँति हिन्दी नाटकों का कायाकल्प कर दिया। इस कायाकल्प में उनके 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक का भी महत्त्वपूर्ण योगदान है।

'ध्रुवस्वामिनी' ऐतिहासिक कथानक पर आधारित है परंतु, इसका महत्व यह है कि प्रसाद के अन्य नाटकों की भाँति

Copyright – Drishti The Vision Fo

Scanned by CamScanner

इसमें भी प्रसाद द्वारा तत्कालीन समाज के लिए आवश्यक राष्ट्रीय - सांस्कृतिक जागरण का प्रयास किया है। यही प्रयास प्रसाद 'स्कन्दगुप्त' एवं 'चंद्रगुप्त' में करते हुए दिखाई देते हैं।

अपने अन्य ऐतिहासिक नाटकों की भाँति प्रसाद द्वारा ध्रुवस्वामिनी में भी कहीं कहीं प्रेम का सौंदर्य के चित्र अंकित हैं परंतु, उनकी दृष्टि संयमित रही है।

'ध्रुवस्वामिनी' की चरित्र योजना हिन्दी नाटक के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। पहली बार प्रसाद द्वारा व्यक्ति के मानसिक द्वंद्व को प्रस्तुत किया गया। आगे चलकर यही विशेषता आधुनिक भावबोध के नाटकों में दिखाई देती है।

'ध्रुवस्वामिनी' नाटक में प्रसाद द्वारा पारसी थिएटर के हल्के गीतों के स्थान पर स्तरीय गीतों का प्रयोग हुआ है। हाँ, यह अवश्य है कि इनके प्रयोग के कारण

Copyright – Drishti The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कहीं कहीं प्रवाह बाधित हुआ है। प्रसाद की भाषा पर तत्समता के कारण [illegible] का आरोप लगता रहा है एवं अरंगमंचीयता का आरोप भी लगता है। परंतु, प्रसाद के शब्दों में 'नाटक के लिए रंगमंच है न कि रंगमंच के लिए नाटक'। वैसे भी आधुनिक तकनीकों ने ध्रुवस्वामिनी की रंगमंचीयता को भी सफल बनाया है। साथ ही, स्त्री केन्द्रित नाटक परंपरा का आरंभ 'ध्रुवस्वामिनी' से ही दिखता है जिसकी नायिका अपने त्याग एवं समर्पण द्वारा अमिट प्रभाव छोड़ती है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The V
Scanned by CamScanner